

पाठ ०५ : आखिरी चट्टान तक (मोहन राकेश)

रचना से संवाद – मेरे उत्तर मेरे तर्क

१. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न १. लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा?

(क) विवेकानंद चट्टान से

(ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से

(ग) पच्छिमी क्षितिज से

(घ) सैंड हिल से

- **उपयुक्तता का तर्क:** यद्यपि लेखक पहले 'सैंड हिल' गए थे, परंतु वहाँ से अरब सागर की ओर स्थित एक दूसरा ऊँचा टीला दृश्य को ओट में लिए हुए था. पूर्ण और अनिरुद्ध सूर्यास्त देखने के लिए लेखक ने एक के बाद एक कई टीले पार किए और अंततः एक सर्वोच्च टीले पर बैठकर खुला विस्तार देखा.

प्रश्न २. "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं ही हूँ" यह कथन लेखक की किस मनःस्थिति को दर्शाता है?

(क) मौन हो जाना

(ख) विस्मित हो जाना

(ग) भ्रमित हो जाना

(घ) आशंकित होना

- **उपयुक्तता का तर्क:** कन्याकुमारी के त्रिसमुद्र संगम पर खड़ी चट्टान से सागर के अनंत विस्तार को देखकर लेखक इतने आश्चर्यचकित और विस्मित (मंत्रमुग्ध) हो गए कि वे अपना व्यक्तिगत अस्तित्व भूलकर उस विराट प्राकृतिक दृश्य का ही एक हिस्सा बन गए.

प्रश्न ३. "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है?

(क) करुणा

(ख) विनम्रता

(ग) आत्मीयता

(घ) संतुष्टि

- **उपयुक्तता का तर्क:** कड़े शारीरिक परिश्रम और लगातार थकती टाँगों के बावजूद जब लेखक ने एक के बाद एक कई रेत के टीलों को पार करके अंततः पूर्ण सूर्यास्त का सर्वोच्च बिंदु पा लिया, तो उनके मन में अपने कठिन प्रयास की सफलता का गहरा संतोष और आत्म-संतुष्टि का भाव जागा.

प्रश्न ४. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है-

(क) बलखाती लहरों का

(ख) सागर की व्यापकता का

(ग) सूर्यास्त के दृश्य का

(घ) पच्छिमी क्षितिज का

- **उपयुक्तता का तर्क:** तीनों ओर से असीम क्षितिज तक फैले समुद्र के अपार जल की गहराई, उसकी भयानक गर्जना और लहरों के असीम फैलाव को देखकर लेखक ने सागर की इस अगाध व्यापकता और विराट प्राकृतिक ऊर्जा को इस अद्वितीय वाक्य के माध्यम से व्यक्त किया है।

प्रश्न ५. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि-

(क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।

(ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

(ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।

(घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

- **उपयुक्तता का तर्क:** यह यात्रा-वृत्तांत केवल भूगोल का शुष्क वर्णन नहीं है, बल्कि इसमें लेखक के मन में उठने वाले रोमांच, भय, सौंदर्यबोध, उदासी और बेकारी जैसी सामाजिक समस्याओं से साक्षात्कार की सजीव और वास्तविक अनुभूतियाँ पूरी गहराई से जुड़ी हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न १. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?

- **उत्तर:** लेखक के ऐसा करने के पीछे मूल कारण उनका **कलात्मक सौंदर्यबोध और पूर्णता की चाह** थी। सैंड हिल पर पहुँचकर लेखक ने देखा कि वहाँ से सामने का विस्तार तो दिखाई दे रहा था, परंतु अरब सागर की तरफ एक और ऊँचा टीला स्थित था, जो सूर्यास्त के एक बड़े हिस्से को अपनी 'ओट' (आड़) में लिए हुए था। लेखक सूर्यास्त को किसी आड़ के बिना, पूरे असीम विस्तार की पृष्ठभूमि में देखना चाहते थे। इसी पूर्ण दृश्य को पाने की तीव्र ललक के कारण वे सैंड हिल की रंगीन भीड़ और आराम को छोड़कर अकेले ही आगे के ऊँचे और दुर्गम टीलों की ओर बढ़ने लगे।

प्रश्न २. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?

- **उत्तर:** लेखक ने कन्याकुमारी के जन-जीवन और स्थानीय लोगों के विषय में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातें बताई हैं:
 1. **शिक्षित बेरोज़गारी की भयंकर समस्या:** कन्याकुमारी की कुल आठ हज़ार की आबादी में लगभग चार-सौ से पाँच-सौ शिक्षित नवयुवक पूरी तरह बेरोज़गार थे, जिनमें से लगभग सौ नवयुवक ग्रेजुएट थे।
 2. **जीवन-संघर्ष और दिनचर्या:** इन शिक्षित युवाओं का मुख्य काम नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर दार्शनिक या सामाजिक विषयों पर बहस करना था। पेट पालने के लिए वे फोटो-एल्बम, शंख और सीपियों की मालाएँ बेचने जैसे छोटे-मोटे काम करने को विवश थे।
 3. **परंपरागत मल्लाह:** वहाँ के मल्लाह अत्यंत साहसी थे, जो रबड़ के पेड़ के केवल तीन तनों को आपस में जोड़कर बनाई गई छोटी और असुरक्षित नावों के सहारे पर्यटकों को समुद्र की भयानक लहरों के बीच से विवेकानंद चट्टान तक ले जाते थे।

प्रश्न ३. "अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया" इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से क्या अभिप्राय है?

- उत्तर: 'प्रयत्न की सार्थकता' से अभिप्राय है—कठिन और अनवरत संघर्ष के बाद अपने मूल लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त कर लेना. लेखक सैंड हिल से आगे बिना यह जाने बढ़ रहे थे कि उन्हें खुला क्षितिज कब दिखेगा. टाँगों के बुरी तरह थक जाने के बावजूद, वे केवल मानसिक दृढ़ता के बल पर एक के बाद एक कई टीले पार करते गए. अंततः एक टीले पर पहुँचते ही उनके सामने पश्चिमी क्षितिज का वह असीम, जादुई और खुला विस्तार फैल गया जिसे वे देखना चाहते थे. उनके द्वारा किया गया शारीरिक कष्ट और अकेले कदमों को घसीटने का श्रम सफल हो गया था, इसी विजय-भाव को 'प्रयत्न की सार्थकता' कहा गया है.

प्रश्न ४. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।

- उत्तर: लेखक के लिए कन्याकुमारी की यात्रा में निम्नलिखित अनुभव बिल्कुल विलक्षण और सर्वथा नए थे:
 1. त्रिसमुद्र संगम पर विवेकानंद चट्टान: तीन विशाल सागरों (अरब सागर, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी) के मिलन-स्थल पर हर तरफ से पानी की भीषण मार सहती हुई समाधिस्थ चट्टान को देखना.
 2. सूर्यास्त के रंगों का द्रुत परिवर्तन: सूर्य के गोले का पानी के लावे में डूबना और कुछ ही क्षणों में सुनहले (सोने) रंग का लहू जैसे लाल रंग में बदलना, फिर बैजनी और अंत में पूरी स्याही (काले रंग) में परिवर्तित हो जाना.
 3. अनाम बहुरंगी रेत: समुद्र तट पर एक-एक इंच पर सुरमई, खाकी, पीली, लाल और काली घटा व लाल आँधी के सम्मिश्रण जैसी चमकीली बहुरंगी रेत को देखना और उसे हाथों से मसलना.
 4. तनों वाली नाव की जोखिमभरी यात्रा: रबड़ के पेड़ के मात्र तीन तनों को जोड़कर बनाई गई नाव से ऊँची-ऊँची लहरों के बीच से गुजरना.

प्रश्न ५. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

- उत्तर: लेखक की मानसिक दृढ़ता और जुझारू प्रवृत्ति को दर्शाने वाले दो मुख्य अंश निम्नलिखित हैं:
 - पहला अंश (टीलों का संघर्ष): "टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा।"

समीक्षा: यह अंश सिद्ध करता है कि लेखक शारीरिक थकान के आगे घुटने टेकने के बजाय अपने आंतरिक संकल्प से संचालित हो रहे थे.

- दूसरा अंश (तट पर खतरे के समय): "तट का सिर्फ तीन-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था... मेरे मन में खतरा बढ़ गया। मैं दौड़ने लगा... मैंने जूता उतारकर हाथ में ले लिया। एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने आ रही हो।"

समीक्षा: अचानक धिरे अँधेरे और समुद्र के बढ़ते पानी के जानलेवा संकट के समय भी लेखक घबराकर हिम्मत हारने के बजाय तुरंत सही निर्णय लेकर चट्टानों पर चढ़ने का साहसिक प्रयास करते हैं.

विधा से संवाद: यात्रा का वृत्तांत

यदि हम लेखक के मानदंडों के आधार पर अपनी 'मनाली (हिमाचल प्रदेश) की पर्वतीय यात्रा' की रचना-प्रक्रिया को समझें, तो तत्त्वों का व्यावहारिक आलेख इस प्रकार होगा:

क्र.सं.	यात्रा-वृत्तांत का mukhya तत्व	मनाली पर्वतीय यात्रा के संदर्भ में सजीव विवरण (अनुप्रयोग)
1	दृश्य-वर्णन	ऊंचे बर्फ से ढके पहाड़, ब्यास नदी का कलकल बहता बर्फीला पानी, चीड़ और देवदार के घने जंगलों की हरियाली और रोहतांग पास पर बिखरी सफेद बर्फ की चादर.
2	आत्मानुभूति व भावनाएँ	गहरी खाइयों को देखकर मन में उठने वाला रोमांच और भय, पर्वतों की असीम शांति में अपने तुच्छ अस्तित्व का बोध और प्रकृति की भव्यता के प्रति विस्मय.
3	सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य	हिडिम्बा देवी का ऐतिहासिक लकड़ी का मंदिर, मॉल रोड पर स्थानीय हिमाचली शॉल और हस्तशिल्प की दुकानें, तिब्बती मठों की शांत धार्मिक परंपराएँ.
4	जीवन-दर्शन	पहाड़ों की कठोर ऊंचाइयों के सामने इंसानी अहंकार की क्षणभंगुरता का अहसास, विपरीत मौसम में भी मुस्कुराते स्थानीय लोगों को देखकर जीवन-संघर्ष की प्रेरणा.
5	रोमांच व संघर्ष	रोहतांग पास की चढ़ाई पर अचानक होने वाली बर्फबारी (ब्लिज़ार्ड) और घटते ऑक्सीजन के बीच संतुलन बनाए रखने की चिंता और रोमांचक संघर्ष.

विषयों से संवाद: यात्रा और खोज

पुस्तकालय और प्रामाणिक संदर्भों के आधार पर भरी गई संपूर्ण विवरण तालिका:

यात्रा-वृत्तांत (कृति)	भौगोलिक स्थान / क्षेत्र	रचनाकार (लेखक)	कृति का मुख्य वैचारिक संदेश / विशेषता
किन्नर देश में	हिमाचल प्रदेश का किन्नौर क्षेत्र	राहुल सांकृत्यायन	दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों की संस्कृति, कठिन जीवन-मूल्यों और तिब्बती सीमांत के इतिहास की प्रामाणिक खोज।
एक बूंद सहसा उछली	यूरोपीय देश और पश्चिमी संस्कृति	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	पाश्चात्य समाज की आधुनिकता, यांत्रिकता और व्यक्ति-चेतना का भारतीय दृष्टि से दार्शनिक मूल्यांकन।
अरे यायावर रहेगा याद	भारत के उत्तर-पूर्वी सीमांत क्षेत्र (असम, नगालैंड)	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	दुर्गम भूगोल के साहसिक रोमांच के साथ-साथ मानव-मन के भीतर की यात्रा का सुंदर समन्वय।
पैरों में पंख बाँधकर	विश्व के विभिन्न ऐतिहासिक देश	रामवृक्ष बेनीपुरी	यात्रा के माध्यम से विश्व-बंधुत्व, मानवीय संवेदनाओं और विभिन्न संस्कृतियों के सौंदर्य का रेखांकन।

मेरे देश की धरती (भौगोलिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य)

प्रश्न १. भारत के समुद्री तट पर स्थित अन्य राज्यों के नाम तथा उनकी अवस्थिति

- उत्तर: भारत की कुल ७,५१६.६ किलोमीटर लंबी तटरेखा पर मुख्य भूमि के ९ तटीय राज्य स्थित हैं, जिनकी भौगोलिक अवस्थिति मानचित्र के अनुसार निम्नलिखित है:

1. पश्चिमी तट (अरब सागर की ओर): गुजरात (सबसे लंबी तटरेखा), महाराष्ट्र, गोवा (सबसे छोटी तटरेखा), कर्नाटक और केरल।
2. पूर्वी तट (बंगाल की खाड़ी की ओर): तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल।



प्रश्न २. अपनी पसंद के पर्यटन स्थलों की विवरणात्मक तालिका

पर्यटन स्थल	राज्य जहाँ वह स्थित है	क्षेत्र का प्रकार	जलवायु (Climate)	घूमने का अनुकूल समय
लद्दाख	लद्दाख (केंद्रशासित प्रदेश)	उच्च पर्वतीय / शीत मरुस्थल	अत्यधिक ठंडी और शुष्क	जून से सितंबर
कन्याकुमारी	तमिलनाडु	तटीय / समुद्री क्षेत्र	उष्णकटिबंधीय / समशीतोष्ण	अक्टूबर से मार्च
जैसलमेर	राजस्थान	मैदानी / थार मरुस्थल	अत्यधिक गर्म और शुष्क	नवंबर से फरवरी
मुन्नार	केरल	पर्वतीय / पश्चिमी घाट (हिल स्टेशन)	ठंडी और भीनी खुशबूदार	सितंबर से मई

प्रश्न ३. कन्याकुमारी की तुलना उत्तर भारतीय मैदानी गाँवों/शहरों से

- उत्तर: कन्याकुमारी की भौगोलिक स्थिति तीन महासागरों के संगम पर होने के कारण यहाँ की जलवायु साल-भर समशीतोष्ण और आर्द्र रहती है, जबकि उत्तर भारत के मैदानी गाँवों में चरम जलवायु (गर्मियों में भीषण लू और सर्दियों में अत्यधिक ठंड) पाई जाती है। कन्याकुमारी का जन-जीवन पूरी तरह समुद्र, मछली पकड़ने (महार उद्योग), नारियल की खेती और पर्यटन पर निर्भर है, जबकि उत्तर भारतीय मैदानी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः गेहूँ, धान की कृषि और पशुपालन पर टिकी है। यहाँ की संस्कृति में द्रविड़ वास्तुकला

(जैसे कन्याकुमारी मंदिर की लाल-सफेद लकीरों) की प्रधानता है, जो उत्तर भारत के नागर शैली के मंदिरों से भिन्न है.

प्रश्न ४. भारत का अंतिम दक्षिणतम बिंदु (Southernmost Point) कौन-सा है?

- उत्तर: वर्तमान समय में 'इन्दिरा पॉइंट' (Indira Point) को भारत का अंतिम दक्षिणतम बिंदु माना जाता है. यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 'ग्रेट निकोबार' द्वीप पर स्थित है (६°४' उत्तर अक्षांश). सन् २००४ की सुनामी के कारण इस बिंदु का एक बड़ा हिस्सा समुद्र में जलमग्न हो गया था। ध्यान रहे कि मुख्य भूमि (Mainland) का अंतिम दक्षिणतम छोर 'कन्याकुमारी' (केप कोमोरिन) ही है, परंतु संपूर्ण भारतीय क्षेत्र का दक्षिणतम छोर इन्दिरा पॉइंट है.

प्रश्न ५. विवेकानंद स्मारक चट्टान के स्वरूप में हुआ आधुनिक विस्तार

- उत्तर: मोहन राकेश ने सन् १९५३ के आसपास जब यह यात्रा की थी, तब वह केवल एक स्याह प्राकृतिक चट्टान थी. परंतु आज विवेकानंद रॉक मेमोरियल के स्वरूप में भव्य विस्तार हो चुका है:
 1. स्मारक भवन (१९७०): वहाँ स्वामी विवेकानंद की एक विशाल कांस्य प्रतिमा के साथ एक भव्य ध्यान मंडप और सभा मंडप का निर्माण किया गया है।
 2. तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा (२०००): विवेकानंद रॉक के ठीक बगल वाली चट्टान पर तमिल संस्कृति के महान संत और कवि तिरुवल्लुवर की १३३ फुट ऊँची गगनचुंबी पाषाण प्रतिमा स्थापित की गई है, जो आज कन्याकुमारी का मुख्य वैश्विक आकर्षण है.

हस्तशिल्प कौशल एवं कुटीर उद्योग

प्रश्न १. स्थानीय शिल्पकार (शंख-माला शिल्पी) के साथ साक्षात्कार प्रतिरूप

(दो छात्रों के जोड़े द्वारा कडल-तट के एक कारीगर से की गई बातचीत का आलेख)

- शिल्प का नाम: समुद्री शंख, सीपियों के आभूषण और सजावटी हस्तशिल्प निर्माण.
- कार्य की अवधि: "हमारा परिवार पिछली तीन पीढ़ियों (लगभग ५० वर्षों) से कडल-तट पर यही काम कर रहा है।"
- प्रशिक्षण: "इसके लिए कोई औपचारिक संस्थागत स्कूल नहीं था; हमने अपने माता-पिता और बड़ों को देखकर घर पर ही यह कौशल पारंपरिक रूप से सीखा है।"
- महिलाओं की हिस्सेदारी: "घर की महिलाएँ समुद्र से लाई गई सीपियों को साफ़ करने, उनमें बारीक छेद करने, मोतियों की मालाएँ पिरोने और टोकरियों में सजाकर बाजार में बेचने का मुख्य काम करती हैं।"
- सामग्री, लागत और विपणन: कच्ची सामग्री (शंख, सीप) समुद्र से मुफ्त मिलती है, लागत केवल पॉलिश और धागों की आती है. विपणन (बेचना) मुख्यतः कन्याकुमारी के घाट पर आने वाले पर्यटकों को सीधे मोल-तोल के माध्यम से होता है.

प्रश्न २. डिजिटल खरीदारी और ई-वाणिज्य (E-Commerce) की कुटीर उद्योग में उपयोगिता

- उत्तर: ई-वाणिज्य (जैसे Amazon Karigar, Flipkart Samarth, या सरकारी ओएनडीसी - ONDC पोर्टल) कुटीर उद्योगों के लिए एक क्रांतिकारी वरदान सिद्ध हो रहा है:

1. **बिचौलियों का अंत:** शिल्पकार सीधे देश-विदेश के ग्राहकों से जुड़कर अपने उत्पादों का सही और पूरा मूल्य प्राप्त करते हैं।
2. **वैश्विक बाजार:** कन्याकुमारी के दूरदराज के मल्लाह परिवारों द्वारा बनाई गई शंख-मालाएँ आज दिल्ली या अमेरिका में बैठा व्यक्ति भी एक क्लिक पर खरीद सकता है।
3. **स्थायी आजीविका:** इससे बेकारी की समस्या दूर होती है और स्थानीय हस्तशिल्प को एक संगठित ब्रांड के रूप में पहचान मिलती है।

प्रश्न ३. हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्रयास

- **उत्तर:** भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं:
 - **'एक ज़िला एक उत्पाद' (ODOP) योजना:** इसके तहत हर ज़िले के पारंपरिक शिल्प को वैश्विक ब्रांड बनाया जा रहा है।
 - **पीएम विश्वकर्मा योजना:** पारंपरिक कारीगरों को आधुनिक टूलकिट, वित्तीय सहायता और संस्थागत प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।
 - **'हुनर हाट' और 'दिल्ली हाट' का आयोजन:** शिल्पकारों को अपने उत्पादों की प्रदर्शनी लगाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मुफ्त मंच देना।

मिलकर चलें (विशेष आवश्यकता वाले साथियों हेतु कार्य-योजना)

प्रश्न १ & २. विशेष आवश्यकता वाले साथियों (दिव्यांगजन) की यात्रा की चुनौतियाँ एवं सहज समाधान

दिव्यांगता का प्रकार	यात्रा के दौरान आने वाली मुख्य चुनौतियाँ	सहज एवं प्रभावी उपयोगी सुझाव (समाधान)
अस्थि दिव्यांगता (व्हीलचेयर प्रयोक्ता)	ऊबड़-खाबड़ रेतीले टीले पार करना, चट्टानों की नुकीली नोकों पर चढ़ना, नावों में चढ़ने-उतरने में असुविधा।	* सभी पर्यटन स्थलों, घाटों और केप होटल के लॉन तक सपाट रैंप (Ramp) और रेलिंग का निर्माण हो. * विवेकानंद रॉक मेमोरियल बोट में व्हीलचेयर लिफ्ट लगाई जाए।
दृष्टि दिव्यांगता	समुद्र के बदलते रंगों, सूर्यास्त की लालिमा और क्षितिज के विस्तार को न देख पाना।	* मुख्य चट्टानों पर ब्रेल लिपि (Braille) में लिखे सूचना-पट और ऑडियो गाइड (Audio Guides) उपलब्ध हों। * समुद्र की लहरों की गर्जना और हवा के झुरमुटों के स्पर्श का अनुभव कराने वाले विशेष स्पर्श-कैनवस (Tactile Maps) हों।

श्रवण दिव्यांगता	मंदिर की घंटियों, मल्लाहों के सुरक्षा निर्देशों और गाइड की बातों को न सुन पाना.	* बोट और घाटों पर प्रशिक्षित सांकेतिक भाषा (Sign Language) के गाइड नियुक्त किए जाएं। * सभी घोषणाओं के लिए डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड लगाए जाएं।
-------------------------	---	--

प्रश्न ३ & ४. विशेष शिक्षा शिक्षक (Special Educator) एवं साथियों के साथ चर्चा की समीक्षा

- **शिक्षक की राय:** विद्यालय के विशेष शिक्षा शिक्षक ने इन सुझावों की सराहना करते हुए कहा कि रैंप और ऑडियो गाइड जैसी बुनियादी सुविधाएँ (Accessible Tourism) देना केवल सहायता नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों का कानूनी अधिकार है।
- **दिव्यांग साथियों की राय:** हमारे सहपाठियों ने कहा कि यदि नावों में हाइड्रोलिक लिफ्ट और रेतीले तटों पर चलने के लिए विशेष चौड़े पहियों वाली व्हीलचेयर मिलने लगे, तो वे भी बिना किसी हिचकिचाहट के विवेकानंद चट्टान जैसी साहसिक यात्राओं का पूरा आनंद ले सकेंगे।

सृजन (Creative Writing)

१. प्रकृति की ओर: सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्यों की तुलनात्मक समीक्षा

सूर्योदय का अनुभव (प्रातःकाल): सुबह जल्दी उठकर जब हम उगते सूर्य की लालिमा को देखते हैं, तो मन में एक नई ऊर्जा, आशा और पवित्रता का संचार होता है। सूर्योदय का दृश्य अंधकार की समाप्ति और कर्म के नए सवेंरे का प्रतीक है। हवा में एक भीनी ठंडक होती है, घाट पर घंटियाँ बजती हैं और भक्त अर्घ्य देते हैं। यह दृश्य अत्यंत शांत, आध्यात्मिक और मन को एकाग्र करने वाला होता है।

सूर्यास्त का अनुभव (सायंकाल): इसके विपरीत, ढलते सूर्य का दृश्य अपने साथ एक अद्भुत भव्यता और साथ ही एक हल्की विदाई की उदासी (विषाद) लेकर आता है। सुनहरी किरणें पीली रेत पर बिखरकर सोने जैसा लावे का भ्रम पैदा करती हैं, जो पल भर में लहू जैसे लाल और फिर बैजनी रंग में बदलकर काली स्याही में विलीन हो जाती हैं। सूर्योदय यदि जीवन की शुरुआत का संगीत है, तो सूर्यास्त जीवन के ठहराव और विश्राम का गहरा दर्शन है। सूर्योदय हमें कर्म की प्रेरणा देता है, तो सूर्यास्त हमें प्रकृति की असीम शक्ति और क्षणभंगुरता का बोध कराता है।

अनुभव की साझेदारी:

यात्रा-संस्मरण - मेरा मनाली यात्रा-संस्मरण

पिछले वर्ष की गर्मियों में मुझे अपने परिवार के साथ हिमाचल प्रदेश के मनमोहक पर्वतीय स्थल 'मनाली' जाने का अवसर मिला। पहाड़ों की वह यात्रा मेरे लिए जीवंत अनुभूतियों से भरी थी। जब हमारी बस चंडीगढ़ के मैदानी रास्तों को छोड़कर व्यास नदी के किनारे-किनारे नुकीले और ऊंचे पहाड़ों के मोड़ों पर बढ़ने लगी, तो खिड़की से नीचे बहते सफेद बर्फीले पानी को देखकर मेरे मन में एक साथ रोमांच और भय दोनों का सम्मिश्रण उमड़ आया।

रोहतांग पास पर पहुँचकर जब मैंने अपनी उँगलियों से पहली बार सफेद बर्फ को छुआ, तो मेरी पूरी चेतना पहाड़ों के उस अनंत विस्तार में खो गई। चीड़ और देवदार के झुरमुटों के बीच से बहती ठंडी हवा ऐसी गूँज रही थी मानो पहाड़

हमसे कोई प्राचीन मूक संवाद कर रहे हों. मॉल रोड पर घूमते हुए स्थानीय हिमाचली शिल्पकारों की लकड़ी की बनी कुटीर कलाकृतियों को देखना और वहाँ के हिडिम्बा मंदिर की लकड़ी की नक्काशी को निहारना एक अद्भुत सांस्कृतिक अनुभव था. पहाड़ों का वह विशाल रूप आज भी मेरी स्मृतियों में एक अमिट अमूल्य धरोहर की तरह सुरक्षित है जो मुझे सिखाता है कि प्रकृति के सामने मनुष्य कितना छोटा और विनीत है.

भाषा से संवाद: व्याकरण की बात (पृष्ठ ९६)

(क) क्रिया-विशेषण की पहचान और उनका सटीक क्रिया-संबंध

पाठ्यपुस्तक के वाक्यों में से क्रिया-विशेषण शब्दों और उनसे संबंधित क्रियाओं की पूर्ण प्रामाणिक तालिका:

क्र.सं.	पाठ्यपुस्तक के वाक्य	क्रिया-विशेषण पद (Adverb)	क्रिया-विशेषण का भेद (प्रकार)	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
उदा.	मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा।	जल्दी-जल्दी	रीतिवाचक क्रिया-विशेषण	'चलने लगा' क्रिया की विशेषता
(क)	बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।	कटती हुई	रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (ढंग)	आती थीं (क्रिया की विशेषता)
(ख)	यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।	उस दिशा में	स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (दिशा)	जा रही थीं (क्रिया की विशेषता)
(ग)	मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।	देर तक	कालवाचक क्रिया-विशेषण (समय)	देखता रहा (क्रिया की विशेषता)

आओ नए वाक्य बनाएँ (शब्दार्थ एवं प्रांजल वाक्य प्रयोग)

1. शब्द/वाक्यांश: क्षितिज

- अर्थ: वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं।
- नया वाक्य प्रयोग: "कन्याकुमारी के समुद्र तट पर खड़े होकर देखने पर क्षितिज तक केवल अनंत नीला पानी ही पानी दिखाई देता है।"

2. शब्द/वाक्यांश: नारियलों के झुरमुट

- अर्थ: पास-पास उगे हुए नारियल के पेड़ों का घना समूह या कुंजा।
- नया वाक्य प्रयोग: "केरल के तटीय गाँवों में दूर-दूर तक फैले नारियलों के झुरमुट हवा के झोंकों के साथ झूमते हुए बहुत मनमोहक लगते हैं।"

3. शब्द/वाक्यांश: रेत की लंबी ढलान

- अर्थ: बालू या रेत का नीचे की ओर झुका हुआ लंबा रास्ता या ढाल।
- नया वाक्य प्रयोग: "रेगिस्तान के ऊंचे टीलों से नीचे उतरने के लिए रेत की लंबी ढलान पर फिसलना बच्चों को बेहद रोमांचित करता है।"

4. शब्द/वाक्यांश: सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला

- अर्थ: एक के बाद एक क्रम से जुड़ी हुई सूखी, अनुर्वर चट्टानी पहाड़ियों की कतार।

- **नया वाक्य प्रयोग:** "राजस्थान के बीहड़ मरुस्थल के पश्चिमी छोर पर सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक फैली हुई है।"

5. शब्द/वाक्यांश: रूखी, बीहड़ और वीरान

- **अर्थ:** सूखी, ऊबड़-खाबड़, डरावनी और पूरी तरह निर्जन या जनशून्य जगह।
- **नया वाक्य प्रयोग:** "चंबल नदी के आस-पास का जो डाकू प्रभावित इलाका है, वह अपनी रूखी, बीहड़ और वीरान भौगोलिक बनावट के लिए कुख्यात है।"

गतिविधियाँ

प्रश्न १. अपरिचित भाषा वाले अनजान यात्री की सहायता कैसे करेंगे?

- **उत्तर:** यदि मुझे किसी ऐसे विदेशी या अन्य प्रांतीय यात्री की मदद करनी पड़े जिसकी भाषा मुझे बिल्कुल समझ नहीं आती, तो मैं निम्नलिखित तीन मानवीय वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करूँगा:
 1. **सांकेतिक भाषा और हाव-भाव (Body Language):** मैं अपने हाथों के इशारों और चेहरे की सौम्य मुस्कान के माध्यम से उसे सुरक्षा का अहसास कराऊँगा (जैसे- पानी पीने के लिए हाथ मुँह के पास ले जाना, रास्ता दिखाने के लिए उंगली से दिशा बताना)।
 2. **स्मार्टफ़ोन तकनीक (Google Translate):** मैं अपने मोबाइल के वॉयस ट्रांसलेटर ऐप में उसकी आवाज़ को रिकॉर्ड करके तुरंत अपनी मातृभाषा में अनुवाद करूँगा और अपनी बात को उसकी भाषा में अनुवाद करके उसे सुनाऊँगा।
 3. **चित्रात्मक माध्यम (Pictograms):** मैं कागज़ पर एक छोटा सा चित्र या मानचित्र (जैसे- बस, होटल, या अस्पताल का चिन्ह) बनाकर उसकी आवश्यकता को समझूँगा और उसकी समस्या का सटीक समाधान करूँगा।

प्रश्न २. 'पधारो म्हारे देश' - हमारे उत्तराखंड क्षेत्र के पर्यटन स्थलों का ब्रोशर (विवरणिका)

पधारो म्हारे देश: देवभूमि उत्तराखंड पर्यटन

१. ऋषिकेश (योग और साहसिक पर्यटन की वैश्विक राजधानी):

- **विशेषताएँ:** गंगा नदी के पावन तट पर स्थित लक्ष्मण झूला, त्रिवेणी घाट की भव्य सांध्यकालीन महाआरती। यहाँ विदेशी पर्यटक योग और अध्यात्म की शांति पाते हैं, वहीं युवा वर्ग रिवर राफ्टिंग और बंजी जंपिंग के रोमांच का आनंद लेता है।

२. नैनीताल (झीलों की सुंदर नगरी):

- **विशेषताएँ:** हरी-भरी पहाड़ियों के बीच स्थित 'नैनी झील' जिसमें नौकायन (बोटिंग) करना मन को असीम शांति देता है। ठंडी और सुहावनी जलवायु के कारण गर्मियों में यह स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है।

३. फूलों की घाटी (Valley of Flowers - यूनेस्को विश्व धरोहर):

- **विशेषताएँ:** उच्च हिमालयी क्षेत्र में स्थित एक बीहड़ और अत्यंत दुर्गम घाटी, जहाँ मानसून के समय ५०० से अधिक प्रजातियों के रंग-बिरंगे प्राकृतिक फूल स्वतः खिल उठते हैं। प्रकृति प्रेमियों और ट्रेकर्स के लिए यह पृथ्वी का सबसे विहंगम दृश्य है।

हमारा संदेश: देवभूमि की पावन संस्कृति, कुटीर हस्तशिल्प और सुहावने पहाड़ों का आनंद लेने के लिए आपका सस्नेह स्वागत है।




भाषा संगम (विभिन्न प्रांतीय भाषा रूप)

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित विभिन्न समृद्ध भाषाओं में 'नाव' शब्द के विभिन्न सांस्कृतिक रूप निम्नलिखित हैं:

- हिंदी / कश्मीरी / तेलुगू: नाव
- संस्कृत / नेपाली / असमिया / बांग्ला / ओड़िआ: नौ, नौका, नाओ
- मराठी / गुजराती / कन्नड़: होड़ी, दोणि
- उर्दू / सिंधी: किशती, बेड़ी
- कोंकणी: बहड़ी
- तमिल / मलयालम: ओडम्, तोणि
- मणिपुरी: हि
- मातृभाषा (हिंदी) में मूल वाक्य का शुद्ध रूप: "ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को ला रहे थे।"

Links और References

यदि आप कन्याकुमारी के विवेकानंद रॉक मेमोरियल, स्वामी विवेकानंद के सामाजिक विचारों और भारत सरकार के युवा कल्याण विभाग के डिजिटल संदर्भों को प्रामाणिक रूप से समझना चाहते हैं, तो संदर्भ कड़ियाँ नीचे दी गई हैं:

-  स्वामी विवेकानंद - युवाओं के लिए सच्चे आदर्श और मार्गदर्शक (हरियाणा राजभवन):
<https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication/> — राष्ट्रीय युवा दिवस (१२ जनवरी) और विवेकानंद के सामाजिक विचारों पर आधारित प्रामाणिक प्रकाशन।
-  स्वामी विवेकानंद - आध्यात्मिक वैज्ञानिक (प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार):
<https://www.pib.gov.in> — भारत सरकार के पीआईबी पोर्टल पर स्वामी विवेकानंद की जीवन यात्रा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ऐतिहासिक आलेख।
-  सरकारी डिजिटल शब्दावली संदर्भ (शिक्षा मंत्रालय):
<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp> — 'कडल-काक', 'क्षितिज' और 'मल्लाह' जैसे विशिष्ट आंचलिक शब्दों के प्रामाणिक भाषाई तुलनात्मक अध्ययन हेतु उपयोगी डिजिटल मंच।